Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

डॉ. अम्बेडर के स्मृतियों पर विचार

Parveen Kumar[1]* Dr. S. N. Singh[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan

[2] Department of History, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan

सार - स्मृतियों पर आधारित समाज चतुर्वण्र्य-व्यवस्था में बटा था। ब्राह्मण वर्ग उसे कहा गया जो सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर विद्या, धर्म और आचार को जीवन में धारण करने वाला समूह था 'क्षत्रिय वर्ण समाज की रक्षा करने के लिए शस्त्र धारण करता था तथा 'वैश्यवर्ण व्यापार, पशुपालन, कृषिकार्य आदि करता था। चतुर्थ वर्ण शुद्र वर्ण माना जाता था। जिसका कत्र्तव्य अपने से पहले तीनों वर्णों की सेवा करना एवं उनसे भरण-पोषण पाना है।[12] अम्बेडकर के अनुसार स्मृति साहित्य में हिन्दू धर्म के सामाजिक संगठन का विवरण दिया गया है। इसमें हिन्दुओं के रीति-रिवाज, संस्कारों का विवरण है। 'मनुस्मृति जो मानव धर्मशास्त्र के नाम से प्रसिद्व है। अन्य स्मृतियां मनुस्मृति की स्टीक पुनरावृति है। इसलिए हिन्दुओं के आचार-विचार और धार्मिक सकल्पनाओं के विषय में पर्याप्त अवधारणा के लिए मनुस्मृति का अध्ययन ही यथेष्ट है।[13]

----------------------------------X----------------------------------

प्रस्तावना

डॉ. अम्बेडर के अनुसार मनु ने अपनी 'स्मृति' में वर्ण-व्यवस्था के बारे में लिखा है कि - नियंता (ब्रह्मा) ने विश्व की समृद्धि हेतु मुख, बाजू जंधा और चरणों के क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व और शुद्र उत्पन्न किए तथा आपस्तम्ब धर्मशत्रु में कहा गया है कि - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व तथा शुद्र चार वर्ण है। इनमें क्रमशः हर वर्ण अपने बाद वाले वर्ण से जन्म से ही श्रेष्ठ है।[14] डॉ. अम्बेडकर के अनुसार मनुस्मृति का अध्ययन करने से अनेक जातियों का पता चलता है जैसे 1. आर्य जातियां, 2. अनार्य जातिया, 3.व्रात्य जातिया, 4. पतित जातियां और संकर जातिया।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार आर्य जातियों का अर्थ है चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य व शुद्र। अनार्य का अर्थ है वे जातियां जो चातुर्वण्य को स्वीकार नहीं करती जिन्हें वह दस्यू कहता है अर्नाथ जाति मानता है। व्रात्य जातियां वे है जो कभी वर्णों को नहीं मानती परन्तु बाद में जिन्होंने इसके विरूद्ध विद्रोह कर दिए।[15]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार मनु ने पतित जातियों में उन्हें सम्मलित कर लिया जिन क्षत्रियों ने आर्य अनुष्ठान त्याग दिए थे। जो शुद्र बन गए थे और ब्राह्मण, पुरोहित जिनके यहां नहीं आते थे।

इनके बाद संकर जातियों की श्रेणियां हुई जो विभिन्न आर्य वर्ण की सन्तानों से उत्पन्न हुई जिनका दो श्रेणियों में विभाजन हुआ अनुलोम व प्रतिलोम, अनुलोम और प्रतिलोम से उत्पन्न जातियां अनार्थ और आर्यों की अनुलोम और प्रतिलोम सन्ताने हुई।[16]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार मनु द्वारा रचित इन पांच जातियों की श्रेणी में से चार को तो सरलता से समझा जा सकता है परन्तु इसमें से पांचवी श्रेणी संकर जाति के विषय में भी ऐसा नहीं कहा जा सकता मनु की यह सुची यत्रवत् है यह एक सम्पूर्ण सूची नहीं है।[17]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार मनु ने अनुलोम और प्रतिलोभ विवाहों के कारण जन्मी 144 जातियों की सूची मनु को प्रस्तुत करनी चाहिए थी क्योंकि इनमें विवाहों की संख्या बारह है डॉ. अम्बेडकर कहते है कि मनु ने केवल ग्यारह जातियां बताई है और इन ग्यारह जातियों के निर्माण में उन्होंने केवल पांच के मिश्रण का उल्लेख किया है।

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर कहते है कि मनु तथा अन्य स्मृतिकारों ने संकर जातियों के जो नाम गिनाए हैं उनमें से कुछ जालि लगते है क्योंकि जिन जातियों को जारज उत्पति का बताया है, मनु से पूर्व उनका किसी ने नाम नहीं सुना था और न ही यह पता चलता कि तब से आज तक वे कहां विलिन है क्योंकि जाति एक अमिट परम्परा है एक बार बन जाने पर उनका अलग आस्तित्व जारी रहता है।[18]

www.ignited.in

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ब्राह्मणवाद ने पशु की तरह घोर नृशंस हो विभिन्न वर्णों के बीच अंतर्विवाहों को रोक देने का काम जारी रखा। मनु एक नया नियम बना देता है।

द्विजों के प्रथम विवाह के लिए समान जाति की स्त्रियां श्रेष्ट होती है और शुद्र स्त्री शुद्र की ही पत्नी हो सकती है। इस प्रकार अत्रि का और उतथ्थ के पुत्र (गौतम) का मत है कि जो शुद्र स्त्री के साथ विवाह कर लेता है वह जातिच्युत हो जाता है, शौनक और भृग का मत है कि जब किसी शुद्र स्त्री से किसी और की सन्तान पैदा होता है वह जातिच्युत हो जाता है।[19]

जो व्यक्ति शुद्र पत्नी की सहायता से देव-कार्य या पितृ-कार्य और अतिथि भोजनादि करता है उसके द्रव्य और कव्य को देवता और पितर स्वीकार नहीं करते और उसे स्वर्ग प्राप्त नहीं होता।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार मनु ने भोजन के बारे में भी कुछ आरोप लगाए है कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ सामाजिक है अगर वह अंतर्विवाह है।

अगर राजा के द्वारा दिया गया भोजन उसके तेज को नष्ट करता है, और शुद्र वर्ग के द्वारा दिया गया भोजन उसके वर्चस को, सुनार के द्वारा दिया गया भोजन उसके जीवन को और चर्मकार के द्वारा दिया गया भोजन उसके यश को नष्ट करता है।

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ब्राह्मणवाद ने अंतर्विवाह और सहभोज पर रोक लगाने के लिए पशु की तरह नृशंस होकर किया। शुद्र स्त्री के संबंध में मनु जो घृणा करता है शुद्र के भोजन के बारे मनु जो कुछ कहता है वह अशुद्ध है जैसे शुक्र या मुत्र।[20]

इन दो नियमों ने जाति प्रथा को जन्म दिया। अतर्विवाह और सहभोज का निषेध जिन पर जाति प्रथा टीकी हुई है। लेकिन ब्राह्मणवाद ने सामाजिक व्यवस्था में अन्य परिवर्तनों का भी सुतपात्र किया लड़कियों के विवाह और विधवाओं के जीवन सम्बन्धी मनुस्मृति में उल्लिखित अनेक नियम बनाए।[21]

मनु के अनुसार पिता, समान जाति के श्रेष्ठ और सुंदरवर को अपनी पुत्री, चाहे उसकी आयु उचित भी न हो अर्थात् वह ऋतुमती न हुई हो निर्धारित विधि के अनुसार उसका विवाह कर दे।

अम्बेडकर के अनुसार मनु यह निर्देश देता है कि चाहे कोई लड़की गर्भ धारण करने योग्य न हुई हो चाहे वह बच्ची हो तब भी उसका विवाह कर देना चाहिए।[22]

विधवा अपने सुख के लिए स्वेच्छापूर्वक शुद्ध पुष्पों, कदमुंल और फलों का आहार कर अपने शरीर को क्षीण कर ले, लेकिन वह अपने पति के निधन के बाद किसी दूसरे पुरूष का नाम भी न ले। परन्तु जो विधवा संतानोप्पति की इच्छा के लिए दौबारा विवाह कर अपने दिवंगत पति का अनादर करती है वह निंदा का पात्र बनती है।

अम्बेडकर के अनुसार बालिका विवाह, विधवा और सती प्रथा का प्रयोजन जाति व्यवस्था को समर्थन देने के अलावा कुछ नहीं था हिन्दु समाज की कार्य प्रणाली बहुत ही जटिल रही है विधवा को उसके पति के साथ चिंता में जला दिया जाता था उसको पुनः विवाह की अनुमति नहीं दी जाती थी।[23]

धार्मिक अवस्था

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिन्दुओं के आचार-विचार और धार्मिक सिद्धान्त स्मृतियों द्वारा निर्धारित है। ये स्मृतियां हिन्दुओं के पवित्र साहित्य का एक अंग है। मनुस्मृति जो 'मानव धर्म शास्त्र' के नाम से प्रसिद्ध है।

मनुस्मृति नियमों की एक संहिता है। यह कथन अन्य स्मृतियों के बारे में सच है यह न तो नितिशास्त्र है और न ही कोई धार्मिक ग्रन्थ नियमों कि किसी भी संहिता को नीतिशास्त्र व धार्मिक रूप में ग्रहण करना नीतिशास्त्र, धर्म और नियमाइन तीनों को आपस में गड़मड़ कर देना है।[24]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार स्मृत धर्म अथवा स्मृतियों पर आधारित धर्म पाँच सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका प्रथम सिद्धांत यह है कि, त्रिदेव में आस्था जिसमें ब्राह्मा, विष्णु, महेश सम्मिलित है। यह त्रिमूर्ति में ब्रह्मा जगत का सृष्टा है विष्णु पालनकार है और शिव संहारक है श्रुति-धर्म के तैतीस देवताओं के स्थान पर स्मृत धर्म केवल तीन देवताओं तक सीमित है।

स्मृत धर्म का दूसरा सिद्धांत संस्कार है स्मृत धर्म के अनुसार प्रत्येक गृहस्थ को कुछ संस्कार करने होते है यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह गरीमा से च्युत हो जाता है।[25]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिन्दु धर्म विभिन्न सम्प्रदायों का मिश्रण है और यह विभिन्न जातियों से मिलकर बना है जितना ध्यान सम्प्रदायों के अध्ययन पर दिया गया है उतना विभिन्न जातियों के अध्ययनपर नहीं दिया गया है जितने सम्प्रदायों से मिलकर हिन्दु धर्म बना है वे असंख्य है भारतीय इतिहास में इनमें से तीन अति महत्वपूर्ण है। एक वह जो ब्रह्मा से सबद्ध है, दूसरा विष्णु से और तीसरा पंथ शिव अथवा महेश का अनुयासी है।[26]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार त्रिदेवों के पंथों की उपर्युक्त सूची में विभिन्न देवी के पंथों के साथ तुलना से दो निष्कर्ष निकलते

www.ignited.in

है। एक यह की ब्रहमा और महेश की उपासना नई कपोल कल्पना है जो चुल्ल नरेश के बाद आरम्भ हुई दूसरा यह कि सभी पुरानी आस्थाए लुप्त हो गई। यह प्रश्न भम्र में डालता है कि ब्राहमणों ने नए पंथो कि कल्पना क्यों की। प्राचीन आवस्थाओं को तिंलाजलि क्यों दे डाली यह प्रश्न केवल जटिल ही नहीं बल्कि विद्वानों को भम्र में डाल देता है कि इस उथल-पुथल में इन्द्र जैसे देवता का भी लोप हो गया। इन्द्र एक वैदिक देवता है। वैदिक देवताओं में वह महानतम था। हजारों वर्ष तक ब्राहमणों ने इन्द्र की पूजा और स्तुति की वह क्या वजय थी कि ब्राहमणों ने इन्द्र की पूजा आरम्भ कर दी। ब्राहमणों द्वारा यह अवस्था बदलने का कारण आध्यात्मिक था अथवा व्यवसायी।[27]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार शिव कौन थे जिन्हें इन्द्र के स्थान पर अपना लिया गया। दक्ष प्रजापति का यज्ञ और उसमें शिव की भूमिका शिव के विषय में महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है दक्ष ने हिमालय पवर्त पर एक यज्ञ किया इस यज्ञ में देव, दानव, पिशाच, नाग, राक्षस और ऋषि सभी सम्मिलित हुए। परन्तु शिव को आमंत्रित नहीं किया गया और एक ऋषि दधीचि ने दक्ष की भत्र्सना की शिव को क्यों नहीं निमंत्रित किया और यज्ञ करना चाहते हो। दक्ष ने इन्कार कर दिया और कहा 'मैंने आपके रूद्र जैसे बहुत से देखे है जाईए मैं शिव को कुछ नहीं समझता। दधीची ने कहा तुमने शिव के विरूद्ध षडयंत्र किया है महादेव ने मुख से एक राक्षस उत्पन्न किया और यज्ञ को विध्वंश कर दिया तो इससे पता चलता है कि एक समय ब्राहमण शिव को पुज्य देवता नहीं मानते थे और शिव ब्राहमणों की यज्ञ प्रथा के विरूद्ध थे।[28]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिन्दु भारत भर में बिना लज्जा और पश्चाताप के लिंग पुजा शिशन का महत्व स्वीकारते है लिंग पुजा शिव से जुड़ी है और यह कहा जाता है कि शिव की सच्ची पुजा ही शिवलिंग पुजा है लेकिन वैदिक कर्मकाण्ड में लिंग पुजा विष्णु से सम्बन्धित बताई गइ्र है। पुराणों में इसे शिव के साथ जोड़ दिया गया यह एक आश्चर्य जनक परिवर्तन है। विष्णु जो आरम्भ से ही लिंग पुजा से संबद्ध थे उनका सम्बन्ध इससे तोड़ दिया गया है और शिव का लिंग पुजा से कोई लेना देना नहीं था यह उनके मत्थे मढ़ दी गई है ब्राहमणों का क्या ईरादा था जो उन्होंने विष्णु को लिंग पुजा से मुक्त करके शिव को इसके साथ लपेट दिया।[29]

अब अंतिम प्रश्न यह है कि ब्रहम विष्णु और महेश के परस्तर सम्बन्धों के संदर्भ में इस से बढ़कर कोई बात नहीं हो सकती जो भगवान दत्तात्रेय के जन्म के विषय में है कहानी इस प्रकार है कि एक बात तीनों देवों की पत्नियां एक स्थान पर बैठी थी तभी नारद जी वहां प्रकट हुए तो एक प्रश्न उठा की संसार में सबसे बड़ी पतिव्रता नारी कौन है तो नारद जी ने कहा अत्रि ऋषि की पत्नि अनसुय्या तो तीनों देवियां चमक उठी और प्रत्येक ने अपने आप को सबसे बड़ी पतिव्रता बताया नारद जी नहीं माने इसके बाद तीनों देवियों ने एक षड़यत्र रचा की अनसुय्या के साथ अवैद संभोग कराकर उनका शील भंग कराया जाए। अपनी योजना के अनुसार तीनों देवियों ने अपने-अपने पतियों को मनाया और अनसुय्या के पास भेज दिया। तीनों देव सती का शील हरन करके अत्रि की कुटियां की और चल पडे।[30] इन तीनों ने ब्राहमण भिक्षुओं का वेश धारण किया। जब वे वहां पहुँचे तो अत्रि बाहर गए हुए थे अनसुय्या ने उनका स्वागत किया और भोजन तैयार किया। तबी तीनों देवों ने उत्तर दिया कि वे भोजन तब करेंगे जब वह निर्वस्त्र होकर भोजन परोसे प्राचीन भारत में अतिथि का नियम था की ब्राहमण भिक्षुक असंतुष्ट होकर न लोटे। जब वह निर्वस्त्र होकर भोजन परोस रह थी। तो उन्होंने अत्रि को आते हुए देखा तो वे नवजात शिशु बन गए। इन तीनों को अत्रि ने पालने में लिटा दिया। उसमें तीनों के अंग जुड़कर एक हो गए तुरन्त सिर अलग-अलग रहे। इस प्रकार दत्तात्रेय बने। जो तीनों देव ब्रहमा, विष्णु और महेश का रूप है।[31]

डॉ. अम्बेउकर के अनुसार इस कहानी में अनैतिकता की दुर्गंध भरी पड़ी है। इसको जान बुझकर ऐसा मोड़ दिया। जिसमें ब्रहमा, विष्णु और महेश के वास्तविक कुकर्म पर पर्दा डाल दिया। यह बड़ी रोचक और जानने योग्य बात है कि ब्राहमणों ने ब्रहमा के साथ क्या रचना रची कोई समय था जब ब्रहमा को सत्ता और गौरव से सर्वोच्च शिखर पर रखा जाता था। ब्रहमा को जगत् का पजापति कहा जाता था। ब्राहमणों अवतारवाद का अविष्कार किया की अवश्यकता पड़ने पर भगवान् को मानव व पशु किसी भी रूप में अवतरित किया जाए इसके पीछे दो उद्देश्य थे। पहला भगवान को श्रेष्ठता बताना जिससे उनका स्वार्थ हो सके दूसरा देवताओं और अन्य व्यक्ति के बीच संधर्ष स्वीकार करना था।[32]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ब्राहमणो ने आगे चलकर पुराणों में अनेक अवतारों और देवताओं की झड़ी लगा दी इन पुराणों में सभी अवतार विष्णु के बताए गए है। आगे चलकर इनके साथ अनेक देवियां भी जोड़ दी गई जैसे शिव के साथ दुर्गा, विष्णु के साथ लक्ष्मी, कृष्ण के साथ राधा, राम के साथ सीता, इनकी शक्तियों की संख्या निश्चित नहीं की गई किसी समय केवल आठ शक्तियां गीनी जाती थी। किसी समय नौ, जैसे वैष्णवी, ब्राहमणी, रोद्री, महाश्वरी, नरसिंह, वराही, इन्द्राणी, कार्तिकी, और प्रधान। लक्ष्मी के अतिरिक्त विष्णु की प्रचार शक्तियां और गीनी जाती है। शिव अथवा रूद्र की दूर्गा अथवा गौरी सहित पचास और शक्तियां है।[33]

इस प्रकार ब्राह्मणों ने हिन्दु धर्म को इस प्रकार नग्न कर दिया। हिन्दु धर्म इससे बढ़कर और कुछ नहीं है जिसमें अनेक देवी देवता और पेड़ पौधे पूजे जाते थे, तीर्थ यात्राएं की जाती थी और ब्रह्मा को दक्षिणा दी जाती थी इस धर्म की रचना ब्राह्मणों ने मात्र इसलिए की ताकि उनकी रोजी, रोटी चलती रहे।[34]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. अम्बेडकर के दस्तावेज - संग्रह नानक चन्द रत्तू।
2. डॉ. अम्बेडकर का पत्र डायरेक्टर ऑफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन, पूना के नाम दिनांक 8 दिसम्बर, 1929 - धनंजय कीर, डॉ. अम्बेडकर: लॉ एण्ड मिशन में उद्धृत।
3. डॉ. अम्बेडकर की महादेव देसाई से बातचीत, हरिजन से लिए अंश, इण्डियन एक्सप्रेस में पुनर्मुद्रित - संग्रह नानक चन्द रत्तू।
4. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खण्ड ट
5. दलित वर्ग अधिवेशन की कार्यवाही रपट, नागपुर सत्र, 1942।
6. डेडीकेशन, "डॉ. अम्बेडकर, पाकिस्तान एण्ड दि पार्टिशन ऑफ़ इण्डिया"।
7. डॉ. अम्बेडकर: "लाइफ एण्ड मिशन"; - धनंजय कीर, दूसरा संस्करण।
8. डॉ. अम्बेडकर एस., "मेम्बर ऑफ़ दि गवर्नर समर लॉ एक्जीक्यूटि काउन्सिल 1942"; - भाग 10।
9. डॉ. अम्बेडकर, "दि प्रिन्सिपल आर्किटेक्ट ऑफ़ दि कान्स्टीट्यूशनल ऑफ़ इंडिया"; 1994।
10. डॉ. अम्बेडकर, "'राइटिस एण्ड स्पीचेस"; भाग - 13 (बम्बई गवर्नमेंट ऑफ़ महाराष्ट 1994 भाग - 13)
11. दि बुद्ध एण्ड हिज धम्म 1992।
12. इन्तिजार नईम, दलित समस्या जड़ में कौन?, पृ. 47
13. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-7, पृ. 223-224
14. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-7, पृ. 24
15. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 217
16. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 218
17. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 223
18. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 224
19. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-7, पृ. 177
20. डॉ. धर्मवीर, डॉ. भीमराव अम्बेडकर के प्रशासनिक विचार, पृ. 74
21. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-7, पृ. 177
22 बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 178
23. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-13, पृ. 186-187
24. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-6, पृ. 185
25. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 183
26. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-2, पृ. 170
27. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-9, पृ. 170
28. डी.आर. जाटव, डॉ. अम्बेडकर का समाज दर्शन, पृ. 134
29. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 171, 173
30. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 173- 174

www.ignited.in

31. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड-6, पृ. 147

32. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड-8, पृ. 174

33. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड-7, पृ. 188

34. राम गोपाल सिंह, डॉ. अम्बेडकर का विचार-दर्शन, पृ. 56

Corresponding Author

Parveen Kumar*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan